FULL STOP - 29

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ इसी बिन्दु की मात्रा के महत्व को जान सदा सहजयोगी बन सकते हो। कितना भी बड़ा विस्तार है लेकिन समाया हुआ-बिन्दु में है। बीज बिन्दु है उसी में सारा वृक्ष समाया हुआ है। आत्मा बिन्दु उसी में 84 जन्मों के संस्कार समाये हुए हैं। 5 हजार वर्ष के ड्रामा को अब संगम के अन्त में समाप्त कर रहे हो, अब ड्रामा का चक्र पूरा हुआ। अर्थात् **जो चक्र बीत चुका उसको फुल स्टाप अर्थात् बिन्दी लगाये, बिन्दी बन, अब घर जाना है।** बिन्दु के साथ बिन्दु बनकर जाना है। घर भी सर्व बिन्दुओं का घर है।

➳ _ ➳ **संकल्प, कर्म, संस्कार सब मर्ज अर्थात् बिन्दी लगी हुई है।** समाप्ति की मात्रा है। ही बिन्दु। सर्वगुण, सर्वज्ञान के खजानों के सागर...लेकिन सागर भी है 'बिन्दुः। सम्बन्ध और सम्पर्क मे भी आओ तो सर्व के मस्तक में क्या चमक रहा है - बिन्दु। सर्व कार्यकर्ता कौन हैं? बिन्दु ही हैं ना।

➳ _ ➳ चाहे धरनी से चन्द्रमा तक पहुंचे तो भी बिन्दु पहुंचा। चाहे आप साइलेन्स की शक्ति से 3 लोकों तक पहुंचते तो भी कौन पहुंचता - बिन्दु। **साइंस की शक्ति या साइलेन्स की शक्ति, निर्माण करने की शक्ति वा निर्वाण में जाने की शक्ति है तो बिन्दु ना!**

➳ _ ➳ **बीज से इतना सारा वृक्ष विस्तार को पाता लेकिन विस्तार के बाद समाता किसमे है? बीज अर्थात् बिन्दु में।** तो अनादि अविनाशी है ही बिन्दु। आप भी तीन कालों की नालेज, तीन लोकों की नालेज प्राप्त करते हो लेकिन प्राप्त करने वाला कौन? 'बिन्दु। आदि से अन्त तक वैरायटी पार्ट बजाया लेकिन पार्टधारी कौन? किसने पार्ट बजाया? बिन्दु ने।

➳ _ ➳ तो महत्व सारा बिन्दु का है। और बिन्दु को जाना तो सब कुछ जाना। सब कुछ पाया। **बिन्दु रुप में स्थित हो जो संकल्प करो, जो भावना रखो, जो बोल बोलो, जो कर्म करो, जैसे बिन्दु महान है वैसे सर्व बातें महान हो जाती हैं अर्थात् स्वत: श्रेष्ठ हो जाती हैं।** (11.11.1981)

➢➢ परमधाम में आत्मा के 7 प्रकार के अनुभव

➳ _ ➳ Silence / Speechlessness / ध्वनि रहित

➳ _ ➳ Peace

➳ _ ➳ मुक्ति / Freedom / Liberty

→ देह के संबंधो से मुक्त

→ देह के भोग से मुक्त

→ देह की तृष्णाओ से मुक्त

→ देह के संस्कारों से मुक्त

→ देह के धर्म से मुक्त

→ देह के अनुभवों से मुक्त

➳ _ ➳ अपने 7 स्वरूपों का अनुभव

→ सुख स्वरुप

→ शांति स्वरुप

→ प्रेम स्वरुप

→ आनंद स्वरुप

→ पवित्र स्वरुप

→ ज्ञान स्वरुप

→ शक्ति स्वरुप

➳ _ ➳ छठे ब्रह्म तत्व का अनुभव

➳ _ ➳ बाबा की किरने मुझ पर प्रवाहित हो रही हैं

➳ _ ➳ My Father & I Are One…